श्रुति सेठिया की पांच कविताएँ

१.मुझे श्रृष्टि कहते हैं।

मैं आसमान का रंग हूं,

या उसमे उड़ता पतंग हूं,

मुझे छूना है आसान नहीं,

में मन में उमड़ा तरंग हूं।

मैं प्रकृति का अनोखा रूप हूं,

मैं छाव हूं, में धूप हूं,

मेरी शाखाएं हैं फैली हुई,

मैं जो भी हूं बस खूब हूं।

मैं तोलने वाला तराजू हूं,

या उसे पकडू वो बाजू हूं,

मैं देखता हूं, दिखाता हूं,

में मूक रहकर भी सिखाता हूं।

मैं एक छोटा सा बालक हूं,

या उस बालक का पालक हूं,

मैं काम में करता देर हूं,

पर बिचर गया तो शेर हूं।

मेरी खुशबू जैसे चंदन हैं,

और पैरो में ना बंधन हैं,

वो महागुरु हर काल के ,

मेरे चरणों में करते वंदन हैं।

मैं अनेकता में छिपी एकता हूं,

मैं बिन देखे सब देखता हूं,

मेरे रंग ढंग है अलग अलग,

पर सब पर प्रेम मैं फेंकता हूं।

मेरे हर कण में तेरा वास है,

तेरी हर कण में मैं रहता हूं,

तू मुझको नाम हजारों दे,

खुदको श्रृष्टि में कहता हूं।।

२.Fully Human -Fully Alive

जिंदा तो मैं दिखती हूं, पर लाश की तरहा जी रही हूं,

मेरे आस पास की बुराइयों को पानी की तरह पी रही हूं,

मेरी आंखों से कुछ छिपा नहीं, पर दुनिया से में छिपाती हूं,

जो दुनिया देखना चाहती हैं, वही रूप मैं उन्हें दिखाती हूं,

यहां सबको ये खबर है कि मुखौटे पर भी मुखौटा हैं,

हम ऐसे जहां में जी रहे हैं जहां हर कोई लगता खोटा हैं,

मैं हाथ बढ़ाना चाहती हूं, पर डरती हूं, घबराती हूं,

मेरा हाथ कहीं न कट जाए, मेरा ध्यान कहीं न हट जाए,

जो इज्जत का कपड़ा मुझे बचा रहा हैं, मेरे हाथों से ना फट जाए,

थोड़ी हिम्मत मैंने जुटाई थी और हाथ भी अपना बढ़ा लिया,

सेवा भाव का यह बुखार खुद के सिर पर भी चढ़ा लिया,

और फिर मैंने जो अनुभव किया, चांद शब्दो में मैं बता नहीं सकती,

मेरे मन मे जो संतुष्टि थी, मैं खुलकर के जता नही सकती,

मुझे उस पल ये आभास हुआ, देने का मन भी जरूरी है,

कुछ ऐसे पथो पार चले बिना, जीवन की यात्रा अधूरी है,

बदलाव की लहर में ला पाई, तो बन जाती मैं खास हूं,

वरना इंसानों की बस्ती मैं, में बस एक जिंदा लाश हूं।

३. **दहेज**

पुरानी ये एक रीत हैं,

जिसे नाम दिया गया प्रीत हैं,

पर प्रीत कभी भी तोलते नहीं,

नहीं मिलने पर कड़वे बोल बोलते नहीं।

एक बेटी होना आसान होता ,

अगर सोच रहा ये हर इंसान होता,

कि बेटियां होती बोझ नहीं,

उनके बिना जीवन मैं मौज नहीं।

पर क्या करें यहीं सोच हैं,

या सोच मैं आई मोच हैं,

की बेटी ब्याहना आसान नहीं,

कांधों पर बड़ा बोझ है।

एक बेटी का पिता ये कहता है:

मेरे कलेजे का टुकड़ा दे रहा हूं,

ना कोई दुखड़ा दे रहा हूं,

जिससे मेरे घर में उजाला हैं,

वो चांद सा मुखड़ा दे रहा हूं,

कहां से लाऊं जेवर, गाड़ी और पैसे,

बेचनी पड़ेगी मुझे मेरे घर और भैंसे,

मेरे जीवन की न इतनी कमाई हैं,

जितना मांग रहा मेरा जमाई है,

मैं फिर भी पैसे जुटा लूंगा,

ये बोझ भी मैं उठा लूंगा,

मेरी बेटी हमेशा खुश रहे ,

इसी शर्त पर मैं विदा दूंगा।

ये पुरानी हो रही बात हैं,

अब बीत रही वो रात हैं,

अपने बाल पे पैसे कमा सके,

हर बेटी की इतनी अकार है।

आज प्रचलित हैं वो सोच नहीं,

बेटी कांधों पर बोझ नहीं,

इसलिए,

आज धन की पेटी नहीं,

सिर्फ बेटी मांगी जाती हैं,

तभी बोझ उतारने के लिए नहीं,

दूसरों का जीवन निखारने के लिए बेटियां ब्याही जाती हैं।

४.शांती और सुलह

जब बेचैनी हर ओर हों,

और हृदय में बसता चैन हो,

जब शोर भी हमको खले नहीं,

और खामोशी भी टले नहीं,

जब मन में उठती लहरे हो,

और विचार भी अंदर गहरे हों,

जब टूटी चीजे जोड दे,

मनभेद को पीछे छोड़ दे,

जब शुरुआतें भी नई करें,

शुरुआत से सब कुछ सही करें,

जब दिल दिमाग आजाद करें,

और विचार हमे आबाद करें,

जब हो , जिसका हो भला करें,

कुछ समझ न आए, सलह करें,

कभी ऐसा जहां देखना हो तो,

शांति रखे और सुलह करें,

एक सफर नया वो शुरू करें,

जो समा नया दिखाता हो,

वो आदर्श ज़रूर स्थापित करें,

जो औरों को भी सिखाता हों।।

५. सरहदों की कहानी

तेरे बारे में क्या कहूं, कोई बात ही नहीं हैं,

दिल में हर पल तू रहता हैं, बस तेरा साथ ही नहीं हैं,

ऐसे तो मैं बहुत बोलती हूं, तुझे देखते ही बातें कम हो जाती हैं,

जब भी तेरा खयाल आता है, ना जाने मेरी आंखें क्यों नम हो जाती हैं,

जब से तुझे देखा है, तेरी आंखों की दीवानी हूं,

पर शायद तेरे दिल की किताब में, मैं एक छोटी सी कहानी हूं,

तुझसे ज्यादा कुछ कहा नहीं हैं, और न अब के पाऊंगी,

बस यहीं सोचती हूं, मैं तुझे देखे बिना कैसे रह पाऊंगी,

आखिर में बस इतना कहना चाहती हूं,

में सिर्फ और सिर्फ तेरे दिल में रहना चाहती हूं।।

———————————

श्रुति सेठिया,

विद्यार्थी, सेंन्ट. जोसेफ महाविद्यालय (स्वायत्त), बेंगलुरु, फोन नं.:6362468046,

E-mial: sethiashruthi0605@gmail.com